शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी कहानियों में ग्रामीण जीवन

निर्मला चौधरी (शोधार्थी:)
हिंदी साहित्य'
श्री अटलबिहारी वाजपेयी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

कहानियां प्रत्येक आयु वर्ग को पसंद होती है । जीवन के निकट होने से इसका प्रभाव सर्वाधिक होता है । वैसे तो संस्कृत साहित्य में अनेक कहानियां हैं, जिनमें तत्व चर्चा के गयी है । हिंदी में कहानी की शुरुआत भारतेंदु युग से मानी जाती है। इन कहानियों में घटना और चमत्कार की प्रधानता थी। मुंशी प्रेमचंद के आगमन के बाद कहानियों में यथार्थ का तत्व जुड़ गया । उन्होंने आम जनजीवन को अपनी कहानियों का विषय बनाया । इसमें भी ग्रामीण सभ्यता और संस्कृति को केंद्र में रखा । प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी कहानियों में ग्रामीण जीवन पर दृष्टिपात किया गया है।

प्रस्तावना

साहित्य में कहानी का जीवन के अत्यधिक निकट होना जरूरी है। "कहानी का जीवन के इतने निकट होना ही उसकी सबसे बड़ी शक्ति और साथ ही आपदा भी है। संवेदना , ज्ञान, अनुभूति, मनुष्य प्रकृति के ये तीन गुण साहित्यकार के लिए अपरिहार्य होते है। " साहित्य को ग्राम्य-जीवन से अलग नहीं किया जा सकता। साहित्य का सीधा संबंध भाव और शब्द से है। शब्द का संबंध कर्म से है और भाव का संबंध समाज से है। इस प्रकार साहित्य ग्राम्य-जीवन और मानवीय कर्म की संरचना है।

प्रेमचंद के अनुसार "किसी सफल कहानी को पढ़कर पाठक को अपूर्व तुष्टि का आभास होना चाहिए। उसे महसूस होना चाहिए की कहानी पढ़कर उसे प्रसन्नता हुई है और यद्यपि स्वयं कहानी की थीम अथवा उससे आधारभूत तथ्य से चाहे उसका मतभेद हो पर लेखक ने उसे थीम के साथ पूरा-पूरा न्याय किया है। " गुलाबरायजी ने कहानी की परिभाषा की कठिनाई को व्यक्त किया है। "कहानी की परिभाषा देना उतना ही कठिन है जितना कि बिहारी की नायिका की तस्वीर खींचना, जो चितेरों को भी क्रूर बना देती है।''

प्रेमचंद प्रधानत : ग्रामीण जीवन के चितेरे हैं। उनका जन्म गांव में हुआ था। वहीं पले-बढ़े। बाद में सरकारी नौकरी करते समय भी उनका संबंध अधिकतर ग्रामीण जनता के ही साथ रहा। वे ग्राम्य जीवन का मोह न छोड़ सके। उनका दृढ़ विश्वास था देश की सच्ची उन्नति तभी हो सकेगी जब वहां के ग्रामीण जीवन को उन्नत बनाया जाए वे इसी विश्वास को लेकर साहित्य क्षेत्र में उभरे थे। गांधीजी का कहना है "यथार्थ भारत-वर्ष गाँवों में है और प्रेमचंद भारतीय गाँवों की अकेली वाणी है।"

प्रेमचन्द का ग्रामीण जीवन चुनने का कारण वहाँ की सरलता है , दुःख और उत्पीड़न है। ग्राम्य जीवन उनका प्रिय विषय है। यही उनका प्रधान

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

क्षेत्र था, जिसे हर पहलू से उन्होंने देखा और चित्रित किया है। चित्रण में व्यक्तिगत अनुभूति और सच्चाई है। उनकी श्रेष्ठ कहानियाँ ग्राम्य जीवन की पृष्ठभूमि पर ही निर्मित हैं। ग्रामीण कृषकों की नाना समस्याएँ उनके दुःख दर्द, उनकी टीस, पीड़ा को यदि किसी ने अनुभव किया है, तो वह प्रेमचंद ही हैं। उनकी कहानियों का स्मरण करते ही भारत के ग्राम्य-जीवन का संपूर्ण परिदृश्य स्मृति पटल पर घूम जाता है। उनकी रचनाएँ पढ़कर उनके आदर्श हमारी दृष्टि से ऊपर उठ जाते हैं।

हिंदी कहानियों में ग्राम्य जीवन

भारतीय ग्राम्य जीवन की स्थिति अत्यन्त दयनीय रही। इसमें दरिद्रता , अंधविश्वास और कुरूतियों के साथ रूढ़ियों परंपरा ने खोखला कर दिया था। गांव में साहूकार को सूद पर किसान-मजदूर को ऋण देकर सब कुछ छीन- झपट लेते थे। वे अन्न पैदा करते तब वह लगान में चला जाता था। 'पूस की रात ' का हल्कू गरीब किसान है। ऋण के बदले तीन रुपये. एवं कम्बल महाजन ले जाता हैं, और पूस की कड़कड़ाती ठंड में रात बिना कंबल के गुजारनी पड़ती है और उसका खेत पशुओं द्वारा चर लिया जाता है। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी प्रेमचंद के बारे में लिखते हैं, " प्रेमचंद की ग्राम्य जीवन संबंधी कहानियों की कला वस्तु-चित्रण और भाव-चित्रण की दृष्टि से कई स्तर हैं। वस्तुतः सामाजिक यथार्थ का वह बोध इन कहानियों में है ही नहीं जो सामयिक जीवन-मूल्यों की प्रतिष्ठा कर सकता है।''

प्रेमचंद युग में ग्रामीण जीवन में सर्वप्रथम कहानी को काल्पनिकता से मुक्त करके 'सामाजिकता' से संसिक्त किया। इससे कहानी में ग्रामीण-जीवन का रूख अपने परिवेश और यथार्थ की ओर मोड़ दिया। इसमें ग्रामीण जीवन में चारों ओर फैला लोक, समाज और परिवेश चित्रित होने लगा। ग्रामीण जीवन में कहानी बहुविध समस्याओं की ओर गया। प्रेमचंद ग्रामीण जीवन की कहानी में यथार्थ को 'निजत्व की परिधि में लाकर पुनर्सृजित करने की बात प्रकारांतर से कहते हैं।

प्रेमचंद ग्रामीण जीवन की कहानी में मूल्यों और आदर्शो की नियोजना आवश्यक मानते हैं। यही वृति उन्हें आदर्शोन्मुख यर्थाथवाद का कलाकार बना देती हैं, किंतु प्रेमचंदजी ने अपनी इस नई जमीन पर खड़े होकर उन्होंने 'पूस की रात ', ठाकुर का कुंआ और कफन जैसी कालजयी कहानियाँ दी। जो परवर्ती नई कहानी का प्रस्थान बिंदु ही बन गई।

ग्रामीण जीवन की कहानी में परंपरा द्वारा पहचानने का ज्ञान जरूरी है। परंपरा में युग-सम्मत परिवर्तन और संस्कार जीवन मूल्येां की पहचान है। मार्कण्डेय लेखक का सामाजिक दायित्व मानते हैं। अमरकान्त भी यथार्थ की इसी सामाजिक प्रतिबद्धता को स्वीकार कर प्रेमचंद की ग्रामीण जीवन परंपरा में ही कहानी का वास्तविक रूप देखते हैं।

इसी प्रकार फणीश्वरनाथ रेणु कहानी को आदमी की जिंदगी की असलियत से जोड़ने की बात कहते हैं। "अपनी कहानियों में, मैं अपने को ही ढूढता हूँ अपने को अर्थात् आदमी को। " ग्रामीण जीवन (कथा लेखन) में समस्त अभावों के बावजूद निज कथाकारों ने ग्रामीण जीवन-परिवेश के चित्रण में अपनी निश्चित पहचान कायम की है। उसमें प्रेमचंद , फणीश्वरनाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह, भैरवप्रसाद गुप्त , कमलेश्वर, मार्कण्डेय, भीमसेन त्यागी , रामदरश मिश्र , गोविंद मिश्र , विवेकीराय, चंद्रप्रकाश पाडेय , प्रभु जोशी , मणि

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मधुकर, मधुकरसिंह, असगर वजाहत, मिथिलेश्वर, जगवीरसिंह वर्मा नाम विशेष महत्वपूर्ण है।

ग्राम्य-परिवेश के इन कहनीकारों में कुछ की कहानियों ने अपना आकर्षण विशेष मतवाद आदि से प्रभावित होकर खोया जैसा भैरव प्रसाद गुप्त आदि ने तो कुछ कहानीक कारों ने ग्रामीण समस्याओं का फार्मूला बद्ध आलेखन कर अपनी कहानियें की शक्ति को समाप्त कर लिया , फिर भी ग्रामीण जीवन परिवेश का यथार्थ अनेक कहानिकारों द्वारा बड़ी कुशलता से अभिव्यंजित हुआ है। यहाँ ऐसे ही कहा नीकारों और कहा नियों पर संक्षिप्ततः विचार करना जरूरी है।

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियाँ आंचलिकता के रंग में रंगी हुई पूर्णिया जिले की जीवन तस्वीर प्रस्तुत करती है। "शिवप्रसाद सिंह की कहानियाँ ग्रामीण समाज के विभिन्न विसंगतियों से साक्षात्कार कराती हैं यथा 'हत्या और आत्महत्या' के बीच में अनमेल विवाह की त्रास द स्थितियों को भोगती शोभा बुआ का मार्मिक चित्रण हुआ है।'

"मंगली की टिकुली' का रामा मजदूर इसी रूप में अपने फार्म के मालिक के अत्याचार एंव व्यभिचार को खुलकर चुनौती देता है। "

कमलेश्वर: की कई कहानियों में वह नायक है, जो गांव का जीवन-परिवेश और मूल्य छूट जाने पर शहर या महानगर में आकर उसके लिए तड़फाड़ता है।

मार्कण्डेय: की कहानियाँ ग्रामीण परिवेश को लेकर लिखी गई हैं , किंतु वे विशेष पहचान स्थापित नीहं कर पाई। विवे कीराय की कहानियाँ ग्रामीण जीवन के कुछ पक्षेां को उजागर कर भी विशेष महत्वपूर्ण नही बन सकी।

भीमसेन त्यागी की कहानियों में पश्चिमी उत्तर-प्रदेश विशेषतः कौरवी-क्षेत्र का जन-जीवन अत्यन्त प्रामाणिकता से चित्रित हुआ है। इनकी कहानियों के पात्र उस जीवन से अत्यन्त प्रामाणित पहचान स्थापित कराते हैं। इन कहानियों में पात्रों की भाषा ही नही अपितु मनः प्रवृतियाँ उसी प्रकार की विश्वसनीयता लिए हुए है, जिस प्रकार प्रेमचंद के पात्र।

'कवि प्रिया' में तो बहुत ही सशक्त ढंग से उस ग्रामीण युवक की मानसिकता चित्रित हुई है , जो शहर और शिक्षा के प्रभाव से वैवाहिक जीवन के ऊँचे सपने , देखता हैं , किंतु उसका यथार्थ उसी पुरानी जमीन पर ला पटकता है , जिसमें दर्जे दो पास रामायण पढ़ने वाली बीबी है, जिसे कविता और पति की प्रेमपातियों से अधिक भैंस से प्यार हैं। कहानीकार गुणवती -गुन्नो ' को ही सार्थकता मानता हैं, क्योंकि उसे रोटी , शहर और, शिक्षा का स्वप्न नही अपितु 'गुन्नो' और उसकी भैंस ही दे पाती है। इस बिंदु पर लेखन प्रकारांतर से गांवो की ओर लोटने के नारे को सही कर देता हैं।

इसी प्रकार 'कोई नहीं' में गांव की उस बहु का धूल में मिलता यौवन ननद के साथ समलैंगि क रति में प्रवृत होता हैं , और जिसका पति सात साल से कानपुर में रोटी कमा रहा है और बहन का विवाह नही कर पाता।"

इन सभी कहानियें में ग्राम्य-जीवन का अत्यन्त घनिष्ट परिचय मिलता है , और गांव-समाज की उस छबि को चित्रित करता हैं , जो स्वतंत्रता के बाद इन वर्षो में बनी हैं।

रामदरश मिश्र की कहानि यों मैं ग्राम्य-जीवन का विशेष महत्व है। ये कहानियाँ भी इस दौर के ग्राम्य जीवन से हैं। इसमें सामाजिक स्तर पर गांव की गरीबी , किसान आदि के शोषण को चित्रित करती हैं , तो वैयक्तिक स्तर पर उस वैचारिकता से परिचित कराती है। जिसे गांव की

मानसिकता में आधुनिकता का संचरण कहा जा सकता है।

'एक अधूरी कहानी ' जैसी कहा नियों की भउजी सदृश नारियां स्त्री-पुरूष के लिए निर्धारित पृथक-पृथक नैतिक मानों को खुलकर चुनौती ही नहीं देती उन्हें भंजित भी करती है।"

गोविंद मिश्र 'कचकौध': "मैं पंडितजी जैसे पात्र इस व्यथा से पीड़ित हैं कि शहर में आकर बसे उन्ही के बेटे-पोते उन सब मूल्यों को ध्वस्त कर रहे हैं, जो उन्होंने आजीवन बड़ी निष्ठापूर्वक पाले थे। उन्हें लगता है कि शहर में आ गई उनकी अगली पीढ़ी हर चीज को मटियामेट कर रही है। प्रभु जोशी के 'उखड़ता हुआ बरगद ':- के बूढ़े ज्योतिषी को भी अपने पुत्र और पुत्र वधू द्वारा ग्राम्य जीवन के मूल्य समाप्त कर दिये जाने का दर्द सालता है।"

वस्तुतः नये गांव की पीढ़ियां जब शहरों में पहुंचती हैं। तो वहां अपना गांव और उसकी मर्यादाएं खोजती हैं , और जब वर्षो नौकरी की जिंदगी बिताकर गांव लौटती है , तो वहाँ शहरी सुविधाएँ और जीवन-पद्धति तलाशती है। कुछ कहानियों में गांव की गरीबी का पारंपरिक रूप में चित्रण भर नहीं किया गया हैं, अपितु उस परिवेश से साक्षात्कार कराया गया है , जिसकी एक पीढ़ी तो गांव में रहकर दिन-ब-दिन गरीब से गरीब होती जा रही है, किंतु शहर में शिक्षा प्राप्त करने गया लड़का कोई अभाव नहीं पाता और वह शहरी जीवन की अपनी आशा , आकांक्षाओं और अपने ग्रामीण परिवार की आर्थिक तंगदस्तियों के बीच त्रिशंकु बनकर जीता हैं।

चंद्रप्रकाश पाण्डेय की 'निरूपायताओं' का बोध एक ऐसी सशक्त कथा है , जिसमें ग्रामीण जीवन का यह पक्ष बड़ी प्रमाणिकता से चित्रित हुआ है। कहानी आज के गांव की एक बहुत सही तस्वीर प्रस्तुत करती है। जिसमें किसान या गांव वाले स्वयं आर्थिक निरूपायताओं के बोझ में दबा हुआ भी अपनी भावी पीढ़ी को शहर में भेजकर उसके लिए सुख जुटाने के लिए कृत्य संकल्प है।"

मणीमधुर की"कहानियों में राजस्थान के, विशेषतः पाकिस्तानी सीमा से लगे गांवों की जिंदगी अपनी प्रामाणिकता में उभेरी गई हैं। फांसी; त्वमेव; माता; चंद्रग्रहण, उजाड़ और अधमरे। आदि उनकी बहुत सशक्त कहानियां है।"

असगर वजाहत की 'खसबू' तथा आलमशाह खान की 'एक और सीमा ' ग्राम्य जीवन की अच्छी कहानियां हैं। ग्राम्य जीवन पर मिथिलेश्वर और जगवीर सिंह वर्मा हाल ही में उभरे हुए नाम हैं, किंतु इन्होंने अल्प समय में ही ग्रामीण कथा लेखन में अपना सुनिश्चित स्थान बना लिया है। मिथिलेश्वर की 'बाबूजी' और 'दूसरा महाभारत' संग्रह की कहानियां ग्राम्य-जीवन की वर्तमान स्थितियों का जीवन्त और प्रामाणिक दस्तावेज है। 'उम्मकैद' में निरपराध व्यक्तियों को फंसाने की पुलिस की जालसाजी एक सीधे सच्चे आदमी को जब पुलिस निरंतर केसो में फंसाती रहती है, तो वह बार-बार एक ही गलती को दुहराने की विवशता में जीता है। उसका घर पुलिस द्वारा खाली कर दिया जाता है आदि स्थितियों को बहुत प्रामाणिकता से उकेरा है। 'बीजारोपण' में अकाल की स्थितियां चित्रित हुई हैं।

आज गांव में भाई-भाई के बीच जो समस्याएं आर्थिक मसलों को लेकर आ खड़ी है और परिवार किस प्रकार आपसी फूट के शिकार हो रहे हैं। किस प्रकार गांव की जनता थाने , कचहरी और विभिन्न प्रकार की गुटबाजियों में पड़ी हुई है। इसका सशक्त चित्रण 'दूसरा महाभारत ' में मिथिलेश्वर ने किया। उनकी कहानियां गांवो के

परिवर्तन परिवेश और जीवन पद्धति से गहरी पहचान स्थापित कराती हैं।

जगवीरसिंह वर्माः- ग्राम्य-जीवन के संबंधों को बहुत ही सूक्ष्म-दृष्टि से जीता है। सारिका पुरस्कार अंक (जनवरी 1980 ई.) में प्रकाशित उनकी ''घर कही नहीं '' एक सशक्त कहानी है , जिसमें सास-बहू के बीच हुई तकरार में बेटा जिस संघर्षपूर्ण मनः स्थिति को जीता है , उसका जीवन्त आलेखन हुआ है। उसके जीवन मूल्यों की सार्थकता मां के 'फिजूल' में तब्दील होकर उसके समस्त जीवन को फिजूल बनाकर रख देती है। आधुनिकता और पुरातनता के मध्य झूलते भारतीय ग्रामीण नवयुवक की पीड़ा को यहाँ बहुत सशक्त ढंग से चित्रित किया है। यह कहानी गांवो की मानसिकता के निकट साक्षात्कार कराती है।

मृदुला गर्ग की 'तीन किलो की छोरी ' कहानी आधुनिक परिवेश में लिखी एक ऐसे गांव की कहानी है जहां प्रसव कार्य अभी दाईयों के द्वारा ही संपन्न होता है। दाइयों द्वारा जने गये बच्चे कभी बच जाते हैं , तो कभी मर जाते हैं। इसी सामाजिक कुरीति की ओर लेखिका ने पाठको का ध्यान आकर्षित किया है। स्वास्थ्य विभाग की दयनीय अवस्था चित्रित की। प्रसव वेदना की प्रक्रिया। बहुत ही मार्मिक ढंग से संपूर्ण क्रिया-कलापो को बड़े बारिकी और विस्तार से लिखा है। यह कहानी शब्द चित्र के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों को भी उजागर करती है। क्षेत्रीय भाषा के शब्दों का प्रयोग कहानी का प्रारंभ शारदा बेन दाई से होता है। वह बच्चे को गोद में लेकर बच्ची का वजन नापती है तो वह तीन किलो निकलता है। वह बहुत खुश इसलिए थी कि अभी तक इतने वजन का बच्चा पैदा नहीं हुआ था।

"तीन किलो। पूरी तीन किलो। वाह री छोरी, तू तो औसत से भी जाड़ी निकली।"

मृदुला गर्ग की 'लौटना और लौटना' कहानी का नायक हरीश जब अमेरिका से अपने देश लौटता है, तो माता-पिता के प्रति उसका-व्यवहार अजनबी हो जाता है। जिस घर में पला-बड़ा है वहां परायेपन का एहसास कर सभी को हेय दृष्टि से देखता है।

साहित्यकार जब गांव के जीवन और परिवेश की चेतना को अपने साहित्य में पूर्णरूपेण -आत्मसात् करता है। तो वहां उस साहित्यकार की ग्राम्य जीवन की कहानियों में युग-चेतना दिग्दर्शित होती है। ग्राम्य जीवन की कहानियों में विविध आयामों में अपनी कहानी प्रति स्थापित करते हैं। साहित्यकार अपनी साहित्यिक कृति में इन सभी आयामों को संमेकित कर सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है, कि साहित्यकार की प्रकृति के प्रति जो सजग ग्राम्य चेतना है। वही विवरण और यथार्थ रूप में सक्रियता दिखा रही है। इसमें कहानीकारों ने शोध एवं समीक्षा के दरवाजे पर दस्तक इस कदर देना शुरू किया कि हमारी सोच में बदलाव लाने की बार-बार हिमायत की है। पाठकों की दुनि या में भी इन ग्राम्य जीवन की कहानियों ने नए सिरे से सोचने के लिए प्रवृत्त किया है। जिसके परिणाम स्वरूप ग्राम्यजीवन की कहानियों में यथार्थ बोध एवं सामाजिक चेतना को प्रेरणा मिली

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 हिंदी कहानी एक अंतरंग परिचय , उपेन्द्रनाथ अश्क पृष्ठ.32

2 कथा की कड़िया - डॉ..शांति भारद्वाज, पृष्ठ 2

3 कथा विवेचना और गद्य शिल्प: रामविलास शर्मा

4 प्रेमचंद विश्वनाथ तिवारी पृष्ठ 89-90

5 प्रेमचंद एवं विवचेना प्रतापनारायण टंडन

6 प्रेमचंद साहित्यिक विवेचना नंददुलारे वाजपेयी, पृष्ठ 178
7 परमानंद श्रीवास्तव, हिंदी कहानी की रचना प्रक्रिया , पृष्ठ207
8 प्रेमचंद साहित्य का उद्देश्य, पृष्ठ.05
9 विद्यानिवास मिश्र 'परंपरा बंधन नहीं पृ.12
10 फणीश्वरनाथ रेणु मेरी प्रिय कहानियाँ - भूमिका
11 शिवप्रसाद सिंह हत्या और आत्म हत्या के बीच सारिका जुलाई 1972, ग्राम कथा विशेषांक
12 भैरवप्रसाद गुप्त 'मगली की टिकुली; सारिका जुलाई 1972
13 भीमसेन त्यागी 'जबान' द्रष्टव्य 'कोई नहीं' तीसरा आदमी कवि प्रिया आदि।
14 रामदरश मिश्र, 'दिनचर्या 'एक अधूरी कहानी ' पृ. 120-121
15 गोविंद मिश्र 'कचकौंध' सारिका जुलाई 1992
16 प्रभु जोशी: उखड़ता हुआ बरगद: धर्मयुग 24 फरवरी 1980
17 चंद्रप्रकाश पांडेय 'निरूपायताओं का बोझ ' गल्प-भारती
18 मणीमधुकर 'त्वमेव माता'
19 मिथिलेश्वर 'दूसरा महाभारत बीजारोपण, पृ. 52
20 जगवीर सिंह वर्मा 'घर कहीं नहीं'
21 तीन किलो की छोरी, पृ. 148
22 श्रीपतराय, कहानी संपादकीय कहानी की बात मार्च 75 पृष्ठ.3
23 श्रीपतराय पृ. 4